भाकृअनुप - केन्द्रीय गोवंश अनुसंधान संस्थान
ग्रास फार्म रोड, पोस्ट बॉक्स सं. 17, मेरठ-250001 (उ.प्र.)
ICAR-Central Institute for Research on Cattle
Grass Farm Road, Meerut Cantt. – 250 001 (UP), India

नॉवेल कोरोना वाइरस (कोविड-19) के कारण लॉक-डाउन अवधि के दौरान पशुपालकों हेतु एडवाईज़री

दिनांक: 04.05.2020

जैसा कि आप जानते हैं कि नॉवेल कोरोना वाइरस (कोविड-19) नामक एक नया साँस/श्वसन संक्रमण रोग दुनिया भर में फैल रहा है। अभी तक की उपलब्ध जानकारियों के अनुसार कोविड-19 का संक्रमण गोवंश में न तो फैलता है और न ही यह इसे फैलाने में कोई भूमिका रखते हैं। भारत सरकार समय समय पर कृषि और संबन्धित गतिविधियों के लिए दिशा-निर्देश जारी कर रही है ताकि कृषक भाइयों को बिना किसी असुविधा के आवश्यक जानकारी दी जा सके और लॉकडाउन (बन्दी) के दौरान किसी भी कठिनाई का सामना न करना पड़े।

भाकृअनुप - केन्द्रीय गोवंश अनुसंधान संस्थान, मेरठ (उ.प्र.) भी ऐसे समय में पशुपालकों की समस्याओं का समाधान करने का भरसक प्रयास कर रहा है। इस लेख में हमने पशुपालकों के लिए लॉक-डाउन अवधि के दौरान कुछ महत्वपूर्ण जानकारियाँ संक्षेप में दी हैं।

पशुधन प्रबंधन

- इस अवधि के दौरान पशुपालक को किसी अन्य फार्म का दौरा नहीं करना चाहिए और न ही किसी अन्य को अपने फार्म पर आने देना चाहिए।
- पशुशाला के प्रवेश द्वार पर एक फिनाइल युक्त फुट बाथ होना चाहिए।

- पशुओं से सम्बंधित कार्य के दौरान मास्क का प्रयोग एवं समय-समय पर साबुन से हाथ धोना आवश्यक है।
- पशुशाला के आस-पास चूना छिड़कना चाहिए तथा पशु बाड़े में सफाई के पश्चात् धुलाई हेतु उचित रसायन जैसे कि सोडियम कार्बोनेट (4%)/ सोडियम हाइपोक्लोराईट (1%) के घोल का प्रयोग करें।
- स्वच्छ दुग्ध उत्पादन के लिए दुहाई के पूर्व एवं पश्चात् पशु के थनों की लाल दवा (0.1% पोटैशियम परमेंग्नेट) से धुलाई करनी चाहिए।

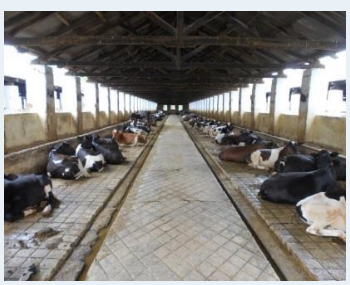

- पशुओं को स्वच्छ पानी उपलब्ध होना चाहिए तथा पानी को स्वच्छ रखने के लिए नांद की समय-समय पर चूने से पुताई करें।

- यदि किसी पशु में संक्रामक रोग के लक्षण दिखाई दें तो उसे अन्य पशुओं से तुरंत अलग (आइसोलेट) कर दें तथा तुरंत पशु चिकित्सक से परामर्श लें।
- इस समय पशुओं पर ग्रीष्म तनाव कम करने के लिए शेड में पंखे/फोगर आदि की व्यवस्था करनी चाहिए, ताकि पशु स्वस्थ रहें और उत्पादन भी बना रहे।
- इस अवधि के दौरान सम्पूर्ण दुग्ध उत्पादन की खपत न होने की दशा में दूध को अन्य उत्पाद जैसे की घी, पनीर, खोया इत्यादि में परिवर्तित किया जा सकता है।

पशुपोषण प्रबंधन

- इस अवधि के दौरान नवजात गोवंश तथा दुधारू पशुओं के पोषण पर अधिक ध्यान देने की आवश्यकता होती है।
- पशुपालक घर में उपलब्ध आहार अवयवों को मिलाकर संतुलित रातिब मिश्रण बना सकते हैं। इस रातिब मिश्रण में अनाज की मात्रा बढ़ा कर 40% तक कर दें तथा इसमें 2% खनिज मिश्रण और 1% नमक अवश्य मिलाएं।
- अगर रातिब में खनिज मिश्रण नहीं मिलाया है तो हर एक पशु को कम से कम 50 ग्राम उत्तम गुणवत्ता का खनिज मिश्रण अथवा पशु चाटन/ यूरिया-खनिज ईंट (UMMB) अवश्य दें।
- नया भूसा रात भर भिगोने के बाद ही पशुओं को खिलाएं।
- पशु के ब्याने से 2 महीने पहले उस का दूध सुखा दें व पशु को पौष्टिक हरा चारा व दाना मिश्रण दें। इस अवस्था में जितनी अच्छी देखरेख होगी, उतना ही ब्याने के उपरांत अच्छा दूध उत्पादन होगा।

प्रजनन प्रबंधन

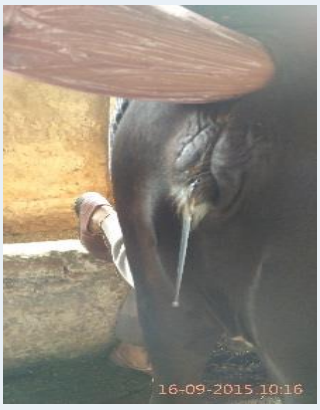

- ग्रीष्मकाल में मद के लक्षणों को पहचानने के लिए प्रातः एवं सायं पशु पर निगरानी रखें। पशु यदि सुबह गर्मी में आया है तो उसी दिन शाम को, और यदि शाम में आया है तो अगले दिन सुबह कृत्रिम गर्भाधान करवा लें।
- जिस पशु में कृत्रिम गर्भाधान होना है उसे बाकी पशुओं से पहले ही अलग बांध लें ताकि तकनिशियन/पेरा-वेट कम अवधि में अपना कार्य पूर्ण कर सके। तकनिशियन द्वारा पशु को छूने से पहले व उसके उपरांत साबुन/60% अल्कोहोलिक सेनीटाईज़र से हाथों की सफाई व मास्क लगाने जैसी सावधानियों पर विशेष ध्यान दें।
- मदहीनता के निवारण हेतु पशु के आहार में खनिज मिश्रण व कॉपर-कोबाल्ट-आइरन की दो गोलियां रोज़ मिलाएँ व पेट के कीड़ों की दवा दें।

- गाभिन पशुओं में 7वें व 8वें महीने से फूल दिखने की शिकायत से बचने हेतु गर्भावस्था के अंतिम तिमाही में अत्यधिक वसा वाला आहार ना दें, व कैल्शियम, फास्फोरस एवं सेलेनियम की पूर्ति खनिज मिश्रणों द्वारा करें। पशु के योनि द्वार को साफ रखें व जब तक चिकित्सक परामर्श नहीं मिलता बाहर निकले हुए अंगों पर ठंडे पानी का छिड़काव करें। बैठने का स्थान ऐसा चयन करें कि पशु का पिछला हिस्सा उठा हुआ हो।
- ब्यांत के 12-24 घंटे के उपरांत जेर न गिरने की अवस्था में पशु को रिपलेंटा (50 ग्राम, दिन में दो बार) इन्वोलोन या यूटेरोटोन जैसे सीरप (पहले दिन 200 मि.लि. व फिर 100 मि.लि. 3 से 5 दिन तक) दें। अगर इन दवाइयों से जेर न गिरे तो पशु चिकित्सक से परामर्श लें।

गोवंश में प्राथमिक चिकित्सा तथा घरेलू उपचार

- अफारा या पेट फूलना (Bloat): पशु द्वारा अत्यधिक हरा चारा खा लेने के परिणाम स्वरूप पेट फूल जाता है और सांस लेने में तकलीफ होती है तथा दम घुटने से मृत्यु भी हो सकती है। अफारा के उपचार हेतु 100 ग्राम टिम्पोल पाउडर अथवा 100 मि.लि. ब्लोटोनील /ब्लोटासिल को गुनगुने पानी में मिलाकर पिलायें। इनके अभाव में कोई भी 100-200 मि.लि. खनिज तेल जैसे सरसों या अरंडी तेल को 25 मि.लि. तारपीन के तेल व 2 मि.लि. पिपरमेंट में मिलाकर पिला सकते हैं।
- मुंह में घाव अथवा छाले: खुर-पका व मुंह-पका बीमारी या किसी नुकीली वस्तु के चुभने से मुंह में घाव हो सकते हैं। ऐसे में पशु के मुंह को लाल दवा (पोटैशियम परमैग्नेट) के घोल (1 चुटकी दवा 1 लीटर पानी में) से धो दें तत्पश्चात बोरिक एसिड का ग्लिसरीन में पेस्ट बनाकर लगाएँ। इन दवाइयों के अभाव में पिसी हुई कच्ची हल्दी को शहद में मिला कर मुंह के छालों पर लगा सकते हैं।
- थन में घाव: घाव को गुनगुने पानी से धोने के उपरांत लाल दवा के घोल से धोएँ। उसके पश्चात उस पर कोई भी कीटाणुनाशक क्रीम जैसे बीटाडीन या सोफ़रामाइसिन दिन में दो बार लगाएं। इन दवाइयों के अभाव में कच्ची हल्दी और नीम के तेल का लेप किया जा सकता है।
- त्वचा में खरोंच अथवा घाव के उपचार हेतु बीटाडीन और पानी के घोल (1:1) से साफ करें और एंटीबायोटिक दवा या कच्ची हल्दी व नीम के तेल का पेस्ट बनाकर लगा सकते हैं। यदि घाव से खून नहीं बह रहा है और केवल सूजन है तो बर्फ की सिकाई करें।
- जले हुए घाव का उपचार: किसी कारणवश अगर पशु जल जाता है तो जले हुए हिस्से को अच्छी तरह ठंडे पानी से धोएं और उस पर सिल्वर सल्फा डाइजीन नामक दवाई को लगाएं इस दवाई के अभाव में नारियल का तेल में थोड़ा सा कपूर मिला कर जले पर लगा सकते हैं।
- आंख में चोट लग जाने पर आंख को अच्छी तरह से साफ पानी से धोएं और बोरिक एसिड पाउडर का घोल (2 ग्राम बोरिक एसिड 100 मि.लि. साफ गुनगुने पानी) से धोएँ।

- करंट लगने की स्थिति में सबसे पहले बिजली के स्विच को बंद कर ले उसके पश्चात पशु का मुंह खुला रखें तथा उसे जमीन पर लिटा कर गर्दन सीधी कर लें और सांस लेने में उसकी मदद करें अगर सांस लेने में दिक्कत हो रही हो तो सीने को दबा कर उसकी मदद करें।
- सींग में चोट अथवा उसके टूट जाने पर सर्वप्रथम रक्त के रिसाव को रोकने के लिए टिंचर बेंजोइन का इस्तेमाल किया जा सकता है तत्पश्चात बीटाडीन ट्यूब लगाकर घाव पर पट्टी की जा सकती है अगर किसी कारणवश रक्त का रिसाव नहीं रुक रहा हो तो तुरंत पशु चिकित्सालय में संपर्क करें।
- नवजात बछड़े में दस्त लगने पर ओ. आर. एस. (ORS) का घोल पिलाएँ। इसके अभाव में चीनी नमक का घोल बना कर पिला सकते हैं इसके साथ-साथ उबले हुए चावल का पानी भी पिला सकते हैं। बुखार होने की स्थिति में पशु चिकित्सक से संपर्क करें।
- खुर में घाव हो जाने पर घाव को लाल दवा से अच्छे से धो लें और उसके उपरांत टॉपिक्योर स्प्रे या हीमेक्स क्रीम का उपयोग करें। घाव में कीड़े पड़ने की दशा में तारपीन के तेल की पट्टी बाँधें। दवाइयों के अभाव में हल्दी व नीम के तेल का लेप लगा सकते हैं।

इस कठिन समय में हमारा संस्थान पशुपालकों से सीधे संपर्क में है और व्हाट्सएप द्वारा किसानों की परेशानियों का हल कर रहा है। अधिक जानकारी के लिए नीचे दिए हुए नंबरों पर टेलीफ़ोन द्वारा आप हमारे संस्थान के विषय विशेषज्ञों से परामर्श ले सकते हैं:

- **डॉ संजीव कुमार वर्मा, प्रधान वैज्ञानिक (पशु पोषण): 9933221103**
- **डॉ अजयवीर सिंह सिरोही, प्रधान वैज्ञानिक (पशु प्रबंधन): 9457071246**
- **डॉ नेमी चंद, प्रधान वैज्ञानिक (पशु औषधि): 9417150462**
- **डॉ सुमित महाजन, वैज्ञानिक (पशु औषधि): 7669231229**
- **डॉ योगेश कुमार सोनी, वैज्ञानिक (पशु पुनरुत्पादन): 7417676424**
- **डॉ मेघा पाण्डे, वैज्ञानिक (पशु पुनरुत्पादन): 9410971314**

संकलन एवं संपादन:

डॉ मेघा पाण्डे, डॉ सुमित महाजन, डॉ योगेश कुमार सोनी

डॉ अजयवीर सिंह सिरोही, डॉ संजीव कुमार वर्मा, डॉ श्रीकांत त्यागी

प्रकाशक:

निदेशक

भाकृअनुप - केन्द्रीय गोवंश अनुसंधान संस्थान, *ग्रास फार्म रोड, मेरठ-250001 (उ.प्र.)।*

संपर्क सूत्र: दूरभाष: 0121-2657136, ईमेल: dirpdcm@yahoo.com,वेबसाइट: www.circ.org.in